हकीकते दीन

किस्त –3

मुफ़क्किरे इस्लाम डॉ0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला

''हुसैन(अ० स०) के पैग़ाम को समझने वाले हिज़बुल्लाह बनगये''

जहां के लोगों ने करबला के पैगाम को सही तरीके से पहचाना वहां हिज़बुल्लाह खड़ा हो गया। लेबनान का यह छोटा सा गिरोह हिज़्बुल्लाह के मानी है अल्लाह का गरोह यह हुसैन का मातम करने वाले हैं, यह हुसैन (अ०) पर आंसू बहाने वाले हैं। अरब के सारे मुल्क, इस्राइल की गुलामी कर रहे हैं। मगर जिन्होंने हुसैनियत को समझा। जिन्होंने हुसैन (अ०) को पहचान लिया वह इस्राइल को रूला रहे हैं। इस्राइल अगर किसी से परेशान हैं तो इसी हिज़बुल्ला के दिलेरों से परेशान हैं। यही हुसैन (अ०) के मानने वाले 'इस्राईल' को छठी का दूध याद दिला रहे हैं। मैं कहता हूं कि अगर इन चन्द दिलेरों ने हुसैनियत से सबक हासिल कर के इस्राईल को छठी का दूध याद दिला दिया तो पूरा आलमे इसलाम (Islamic world) अगर हुसैनियत से दर्स हासिल कर ले तो दुनिया की कौन सी सुपर पावर है जो इस्लामी मुल्कों के सामने टिक सके। करबला बातिल के सामने न झुकने का नाम है। इसलिए ये ज़िक्रे हुसैन (अ०) उस वक्त तक होता रहेगा जब तक ज़ालिम हुकमराँ (Cruel Rulers) मौजूद है। जब तक ख़ून चूसने वाले मौजूद रहेंगे, उस वक़्त तक ये ज़िक्र होता रहेगा।

'' अपने दिलों में अल्लाह का इश्क पैदा करें''

आजकल बड़े इश्क के मामले चल रहे हैं। बड़े (LOVE AFFAIRS)चल रहे हैं। मेरे बच्चों, लव (LOVE)से दूर रहना, ये लव नहीं होता है बल्फ होता है। मेरी ज़िन्दगी निकाह और तलाक पढ़ने में गुज़री है। मेरे बच्चो! आजकल ये मामले बहुत चल रहे हैं। इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) से किसी ने सवाल किया कि मौला यह बताइए कि लोग किसी पर आशिक क्यों हो जाते हैं? आपने फरमाया कि जब दिल अल्लाह के इश्क से खाली होते हैं तो बन्दों के इश्क में गिरफ्तार हो जाते हैं। तो मेरे बच्चो! अगर इस बवाल से बचना है तो अल्लाह का इश्क अपने दिलों में पैदा करो। जिस दिल में इश्क इलाही पैदा हो जाता है, वहां किसी दूसरे के इश्क की जगह ही नहीं रहती है।

''सूर–ए–यूसुफ़ का सुनाना रसूल (स०) के अज़ीम किरदार की दलील

कुरान मजीद में एक सूरा है जिसका नाम है 'सूर–ए–यूसुफ़'। इस सूरे में हज़रत यूसुफ़ (अ०) की पाकदामनी, किरदार की बलन्दी, तहारत और पाकीज़गी का पूरा ज़िक्र है। किस तरह हज़रत यूसुफ (अ०) जुलैखा के हुस्न के फरेब से बचे। उस इमतेहान में कामयाब हो गये जहां कोई टिक नहीं सकता था। दरवाज़े बन्द, हुस्न का पैकर नज़रों के सामने, इधर हुस्न उधर इश्क लेकिन जनाबे यूसुफ (अ०) इस इमतेहान की मंजिल में इस तरह गुजरे कि दामने इस्मत पर गर्द नहीं पड़ने पाई। आज कल पैगम्बरे इसलाम (अ०) के दामने इस्मत पर भी दाग़ लगाने की

कोशिशें हो रही हैं (कई बदबख्त सलमान रूश्दी पैदा हो गये हैं जो आप के दामन पर दाग़ लगाने की कोशिश कर रहे है) मैं आप के सामने एक नफसियाती (Psychological)बात कहना चाहता हूँ कि माज़ल्लाह अस्तग़फ़िरूल्लाह कोई आदमी अगर LOOSE CHARACTER का हो और वो ये दास्ताने इस्मते युसुफ़ (अ०) बयान करे तो उसकी ज़बान लड़खड़ायेगी कि नहीं लड़खड़ायेगी? अपना किरदार याद आयेगा और ज़बान लड़खड़ा जायेगी। जिस वक्त पैग़म्बर (स०) ने ये सूरा सुनाया, उस वक्त किसी दुश्मन ने ये क्यों नहीं कह दिया कि ये होता है एक नबी का किरदार। लेकिन आपका किरदार क्या है? तो पैग़म्बर का पूरा सूर–ए–यूसुफ़ सुनाना और ज़बान का न लड़खड़ाना और किसी का पैग़म्बर (अ०) पर एतराज न करना, इस बात की दलील है कि पैग़म्बरे पाक (स०) का दामन भी हर गर्द से पाक था।

''मस्जिदें अलग–अलग होने से मुसलमानों के बीच ग़लतफ़हमियाँ पैदा हो गईं''

मुसलमानों के बीच बड़ी ग़लतफ़हमियाँ (Misunderstandings)हैं और ये सारी ग़लतफ़हमियाँ इसलिए हैं कि मुसलमान अल्लाह के नाम पर भी एक होने को तैयार नहीं है। ये सुन्नी की मस्जिद है, ये शिया की मस्जिद है। ये देव बन्दी की मस्जिद है, यह अहले हदीस की मस्जिद है। अल्लाह, बेचारा इतना ग़रीब हो गयाकि अब उसकी कोई मस्जिद ही नहीं रह गयी। उस बेचारे का तो माज़ल्लाह इन्तेकाल हो गया। जब इन्तेकाल हो जाता है तो जायदाद तक़सीम हो जाती है। एक बेटा था बरेलवी, एक मस्जिद वो ले गया। एक बेटा था शिया, एक मस्जिद वो ले गया। एक बेटा था देवबन्दी, एक मस्जिद वो ले गया। ये बड़ी गहरी साज़िश है। ये जो अल्लाह के नाम पर मुसलमान एक हो सकते थे, मस्जिदें अलग–अलग करना बड़ी गहरी साज़िश हो गयी। इसका नतीजा यह हुआ कि शिया जानते ही नहीं कि सुन्नी क्या हैं? सुन्नी जानते ही नहीं कि शिया क्या हैं? तो मस्जिदों के अलग–अलग होने से नमाजें अलग–अलग हो गयी। जमाअतें अलग– अलग हो गयीं। वो एक मस्जिद जो मरकज़े इत्तेहाद थी वह भी खत्म हो गयी। अब लड़ते रहिये! दोनों में एक दूसरे के लिए ग़लत फहमी पैदा हो गई यह (GAP OF COMMUNICATION) का नतीजा है। शियों में गलतफहमियां पैदा हो गयीं सुन्नियों में के लिए और सुन्नियों में गलतफ़हमियाँ पैदा हो गयीं शियों के लिये।

(बक़िया पेज नं0 14,.....................)

रूददो युसुफ़ अला याकूब''ऐ यूसुफ़ (अ0) को याकूब (अ0) से मिलाने वाले अरे मेरे अली अकबर को मुझ से मिला दे। इधर उम्मे लैला की दोआ ख़त्म हुई उधर हुसैन ने आकर मुबारकबाद दी खुदा मुबारक करे तुम्हारा बच्चा कामयाब हुआ। मैं कई मरतबा पढ़ चुका हूँ मेरे दिल की बात है।

मैं जानता हूँ कि जब से करबला में आये थे अहलेबैत (अ0) कोई मुसकुराया नहीं था लेकिन अब फत्ह व कामरानी का मशरादा बना तो उम्मे लैला ने आँसू पोंछे। दिल में एक मसररत की लहर उठी मेरा बच्चा कामयाब हो गया मगर मुसकुराहट आयी ही थी कि एक मरतबा मैदान से आवाज़ आयी।

या अबता अलैका मिन्नि सलाम
ऐ बाबा अली अकबर का सलामे
आखिर कबूल हो यूँ चले कि कमर पकड़े हुऐ
या बुन्नइया अललददुनिया बादकल अफ़ा
ऐ बेटा तेरे बाद ज़िन्देगानी खाक हो गयी।